thearyasamaj.org

संस्थापित १८६७ ई.

ओ३म्

उप ज्योतिः चक्षुषु आर्याय — ओ३म् — आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : ११६ ● अंक : १९ व २० ● २७ मई एवं ३ जून २०१४ ज्येष्ठ कृ. चतुर्दशी व ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी सम्वत् २०७१ ● दयानन्दाब्द १९० वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३११५

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की नई सरकार से देशवासियों में नई आशाओं का संचार

'बेरोजगारी, सामाजिक अपराध और नई केन्द्रीय सरकार'

मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

आज देश में सर्वत्र मोदी सरकार की चर्चा है। अच्छे दिन आने वाले हैं का नारा मोदी जी ने बुलन्द किया था जिसे देश ने स्वीकार किया और उन्हें विजय प्रदान की। उनकी सरकार केन्द्र में स्थापित हो गई हैं। अब मोदी जी का जनता से किये गये वादें पूरे करने का समय आ गया है। हम समझते हैं कि आज देश के समस्त युवा बेरोजगार मोदी जी की ओर आंखे लगाये हुए है और आशा कर रहे हैं कि कब उन्हें उनकी योग्यता के अनुसार रोजगार मिल सकेगा। हमने विगत दिनों ''क्या अच्छे दिन आ गये हैं, ?शीर्षक से एक लेख लिखा था जिसे अनेक पाठकों ने पसन्द किया। प्रतिक्रियाओं में एक पाठक ने हमें बेराजगारी और अपराध पर एक लेख लिखने का अनुरोध किया जिसका परिणाम यह लेख है। हम जानते हैं कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के हाथ में जादू की कोई छड़ी नहीं है कि जिससे वह देश की सभी ज्वलन्त समस्याओं को हल कर सकें। तथापि प्रधानमंत्री व उनकी सरकार योजनायें बना सकती है और उन्हें क्रियान्वित भी करा सकती है। भ्रष्टाचार न हो तो योजनाओं का लाभ अधिक लोगों को मिलता है और भ्रष्टाचार के कारण योजनाओं का अधिकांश धन नेताओं, सरकारी अधिकारियों व ठेकेदार आदि की जेबों में चला जाता है। प्रधानमंत्री जी को योजनायें भी बनानी है और भ्रष्टाचार पर अंकुश भी लगाना है। 'यथा राजा तथा प्रजा' का सिद्धान्त सर्वत्र लागू होता है। प्रधानमंत्री जी की सत्यनिष्ठा व ईमानदारी जगजाहिर है और उनके पास गुजरात के 12 वर्षो तक मुख्यमंत्री रहने और वहां उन्नति व प्रगति की क्रान्ति करने का अनुभव भी है। वह जानते है कि भ्रष्टाचार दूर केसे करना है। निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि भ्रष्टाचार पर अंकुश लगेगा और उस धन से देश के लोगों को लाभ पहुंचेगा। हमें लगता है कि अभी 100 दिन तक प्रतीक्षा करनी होगी और यह देखना होगा कि इसके बाद सरकार की इन दिनों की घोषणायें और उपलब्धियां क्या हैं?भ्रष्टाचार कम हुआ या नहीं, इस बारे में संकेत क्या हैं?सरकार के नेताओं के इरादे क्या हैं व उनका किस प्रकार का व्यवहार है। इससे अनुमान लग जायेगा कि आने वाले दिन जनता की आशाओं के अनुरूप होगें या नहीं?

बेरोजगारी पर श्री नरेन्द्र मोदी जो योजनाएं बना रहे हैं वह तो बनायेंगे ही, इसके साथ हम समझते हैं कि उन्हें विशेषज्ञों की की बहुसदस्यीय समिति बनानी चाहिए। इसके सदस्य वह लोग हों जिनके पास इनका पर्याप्त ज्ञान व अनुभव हों। उनसे कहा जाये कि वह व्यापक रूप से विचार करें और सरकार को शीघ्रतिशीघ्र सुझाव व सिफारिश प्रस्तुत करें कि बेरोज़गारी की समस्या कम से कम समय में कैसे हल की जाये व उसकी योजनाएं क्या हों?भ्रष्टाचार विषयक कानून को अधिक कारगर बनाया जाये और ऐसी व्यवस्था की जाये कि कोई भ्रष्टाचार करने की बात सोच भी न सके। करने से क्या नहीं होता?ईश्वर दिखाई नहीं देता, वैज्ञानिक लोगों ने उसके अस्तित्व को अस्वीकार तक कर दिया है परंतु प्रयत्न करने, साधना और उपासना करने तथा दृढ़ निश्चय कर इस काम में लग जाने पर साधकों व उपासकों को वह प्राप्त हो जाता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती मोदी जी की तरह गुजरात से ही आये थे। ईश्वर साक्षात्कार कर ही वह देश व संसार के धार्मिक सुधार के कार्य में प्रवृत्त हुए थे और उन्हें सफलता भी मिली थी। उनका सक्रिय कार्यकाल सन् 1860 से सन् 1883 तक ही रहा और इस 23 वर्ष की अवधि में उन्होंने संसार में आध्यात्मिक और सामाजिक क्रान्ति की। क्या आज कोई मूर्तिपूजा को तर्कसंगत, वेदसंगत, घोषणाओं के अनुरूप परिणामकारी सिद्ध कर सकता है?कदापि नहीं। इसी प्रकार संसार की सभी पुस्तकों में पूर्ण सत्य केवल और केवल मात्र ईश्वरीय ज्ञान ''वेद'' में ही है। अन्य धार्मिक व सामाजिक ग्रंथों में अनेकानेक असत्य, अज्ञान व अनुचित बातें दिखाई व बताई जा सकती है। यह स्वामी दयानन्द की दृढ़ इच्छा शक्ति व साधना का परिणाम है। इसका तात्पर्य है कि ईमानदारी से कार्य करने पर आशा के अनुरूप परिणाम प्राप्त किया जा सकता है। यहां हम सरकार द्वारा एसआईटी बनाये जाने का स्वागत करत हैं। इसका कार्य विदेशों में अवैध रूप से राजनीतिज्ञ, व्यावसायिक घरानों व अन्यों द्वारा जमा कराये गये लाखों करोड़ों रूपयों के कालेधन को भारत लाये जाने के लिए प्रयास करना है। हम समझते हैं

शेष पृष्ठ...२

वेदामृतम्

ओ३म् यदन्ति यच्च दूरके भय विन्दति यामिह पवमान वि तज्जहि। {० ६-६४-२१

अर्थ– (यत्) जो (अन्ति) समीप (यत् च) और जो (दूर के) दूर (इह) यहां मुझे (भय) भय (विन्दति) प्राप्त करता है (पवमान) हे सर्वत्र संचारी पवित्रकर्ता सोम प्रभु (तत्) दसे (विजहि) विनष्ट करो।

भावार्थ– हे पवमान प्रभु हमे निकट व दूर के सभी भयों से बचाओ क्योंकि तुम्ही केवल यह कर सकते हो। तुम्हारा सच्चा ध्यान मेरे अन्दर आत्म बल उत्पन्न कर सकता है। तुम पवमान हो सर्वत्र संचारी सर्वव्यापी और अन्तःकरण को पवित्र करने वाले हो, तुम सर्वत्र मेरे चित्त की भय दशा को जानकर मुझे उससे मुक्त कर पवित्र करते रहो। हे पवित्रा के देव! तुम मेरे भयों को समूल विनष्ट कर दो जिससे फिर कभी भय मेरे मानस को आनन्त न कर सके। समीप और दूर के सब स्थानों एवं सब दिशाओं को मेरे लिए निर्भय कर दो।

डा. रामनाथ वेदालंकार

राष्ट्र के 15वें प्रधान मंत्री लौहपुरुष श्री नरेन्द्र मोदी को उनके राष्ट्र संवर्धन के संकल्प की सम्पूर्त्यर्थ शतशः शुभकामनाएँ

भारत के 2014 के लोक सभा निर्वाचन में भारी बहुमत से भारतीय जनता पार्टी एवं सम्बद्ध दलों की विजय के मूल में श्री नरेन्द्र मोदी जी का राष्ट्र के सम्वर्धन के लिए निःस्वार्थ भाव से जीवन का समर्पण है। वे दृढ़ निश्चयी निश्छल विचारक एवचं राष्ट्र को सर्वतंत्र स्वतंत्र सुखी समृद्ध बनाने के लिए सर्वात्मना समर्पित सेवक के रूप में प्रस्तुत होकर निर्वाचन में विजयी होकर प्रधान मंत्री पद पर अधिष्ठित हुये हैं।

उनके प्रधान मंत्री के रूप में राष्ट्र का सेवक बनकर राष्ट्र संवर्धन के निश्चय के प्रति सम्पूर्ण राष्ट्र उल्लसित है। इस शुभ घड़ी पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की ओर से हम उनके प्रति शुभ कामनाएं प्रस्तुत करते हुये उन्हें वचन देते हैं कि उनके सम्पूर्ण राष्ट्र संवर्धन कार्यों में आर्य समाज का उन्हें सदैव सहयोग रहेगा।

आचार्य स्वदेश
प्रधान

भुवन तिवारी
मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश
5, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

आचार्य स्वदेश
प्रधान/संरक्षक

भुवन तिवारी
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

देश के प्रति सर्वात्मना समर्पित नव निर्वाचित प्रधानमंत्री लौहपुरूष श्री नरेन्द्र मोदी ने प्रधानमंत्री पद की शपथ ली।

2014 के लोकसभा निर्वाचन में लौह पुरूष श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी ने अपने सहयोगी दलों के साथ पूर्ण बहुमत से विजय प्राप्त की है।

26 मई को सायंकाल 6 बजे राष्ट्रपति भवन के विशाल खुले प्रांगण में देश के 15वें प्रधानमंत्री के रूप में लौहपुरूष श्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी को भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने शपथ दिलाई उनके साथ ही 45 अन्य मंत्रियों को भी राष्ट्रपति जी ने शपथ दिलाई। इस शपथ ग्रहण में मोदी जी के आमंत्रण पर सार्क देशों के सभी राष्ट्राध्यक्षों ने पहुँचकर अपनी शुभकामनाएं भेंट की। शपथ ग्रहण का समारोह सर्वत्र टेलीविजन के द्वारा देखकर सभी देशवाशी हर्षोल्लास से परिपूर्ण दिखाई दे रहे थे। शपथ ग्रहण समारोह में देश विदेश के लगभग 3500 व्यक्ति आमंत्रित किये गये।

शपथग्रहण समारोह में देश के प्राय: सभी दलों के प्रमुख लोगों ने भाग लेकर राष्ट्र सम्वर्धन में नई सरकार को अपना योगदान देने का मौन संकल्प लिया। प्रधानमंत्री के रूप में राष्ट्रवासियों के नाम प्रथम सम्बोधन में उन्होंने बिना किसी वर्ग व जाति भेद के सम्पूर्ण राष्ट्रवासियों को सुख समृद्धि से पूर्ण बनाने के लिए अपने को सेवक के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार, अनाचार और आतंक मुक्त भारत बनाने के लिए वे पूर्ण संकल्पित है। उनके जीवन का एक एक क्षण राष्ट्र सम्वर्धन के लिए समर्पित रहेगा। सारे विश्व के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रखने का भी आश्वासन दिया। इस अवसर पर पधारे पाकिस्तान के प्रधानमंत्री श्री नवाज शरीफ से भी सौहार्दपूर्ण वार्ता में दृढ़ता से पाकिस्तान में पल्लवित आतंकवादी तत्वों को विनष्ट करने, बम्बई हमले के दोषियों का अति शीघ्र दण्डित करने, दाउद इब्राहीम व आतंकी तत्वों पर पूरी तरह से विधिक सख्त कदम उठाने का आश्वासन चाहा। तथा सभी प्रकार के दोनों देशों के सम्बर्धन के उपायों की मिलजुल कर सम्मानपूर्वक करने का अनुरोध किया।

कालाधन की कमाई को पूरी तरह से रोकने और विदेशों में जमा काले धन को देश में वापस लाने के लिए पूरी तरह से जांच करने के लिए सर्वोच्च न्यायालय से अवकाश प्राप्त न्यायाधीश की अध्यक्षता में एक स्वतंत्र समिति का गठन भी 27 तारीख को कर दिया। जो उसकी त्वरित जांच करके अति शीघ्र निर्णय देगी।

नव निर्वाचित प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की प्रथम दिन से देश के सम्बर्धन की भावना का प्रदर्शन उनके तत्काल निर्णयों से दिग्दर्शित हुआ। पूर्ण विश्वास है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी अपने सभी सहयोगी मंत्रियों के साथ राष्ट्र को सुख समृद्धि से पूर्ण बनाने एवं राष्ट्र की अखण्डता को अक्षुण्ण रखने में समर्थ होंगे। सारे राष्ट्र की दृष्टि इसी उद्देश्य से उनपर टिकी है। प्रभु उन्हें उद्देश्य पूर्ति में पूर्ण सफलता दे। मैं अपनी व आर्य मित्र परिवार की ओर से इस शुभ अवसर पर आपके राष्ट्र सम्बर्धन के लिए भ्रष्टाचार, अनाचार व आतंक रहित राष्ट्र बनाने के लिए जीवन के एक एक क्षण के समर्पण की भावना का अभिनन्दन करता हूँ। और सफलता के लिए शुभ कामनाएं भेंट करता हूँ।

सम्पादक

प्रदेश सरकार बिजली पारेषण में पक्षपात न करें।

दिनांक 24 मई के समाचार पत्रों से ज्ञात हुआ कि गर्मी की भीषणता के कारण बिजली की मांग बढ़ गई है। परंतु प्रदेश सरकार उसका पारेषण पक्षपातपूर्ण ढंग से कर रही है-यथो वी आई पी क्षेत्र-इटावा, मैनपुरी और कन्नौज में बिजली 24 घण्टे दी जा रही है। परंतु वाराणसी में 10-12 घण्टे, आजमगढ़ में 20-22 घण्टे कहीं 10 घण्टे कहीं 6 घंटे का पारेषण हो रहा है। यह तो जन सामान्य के प्रति घोर अन्याय है। उत्तर प्रदेश में सम्प्रति समाजवादी पार्टी की सरकार है। प्रदेश की सारी जनता को सम दृष्टि से देखना यह राजधर्म है। परंतु प्रदेश सरकार बिजली वितरण में ऐसा नहीं कर रही है वह उसमें कहीं कम कहीं ज्यादा बिजली देकर घोर पक्षपात कर रही है। मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव का यह धर्म है कि वे ऐसा पक्षपात पूर्ण कार्य बन्द करके प्रदेश के सम्पूर्ण क्षेत्र में समान रूप से बिजली का पारेषण करके अपने राजधर्म का पालन करें।

-सम्पादक

पृष्ठ.....१ का शेष

कि इसमें पूर्ण या आंशिक सफलता तो मिलेगी ही। इस धन का प्रयोग बेरोजगारी दूर करने, आधारभूत ढांचा तैयार करने, विद्युत का उत्पादन में वृद्धि, ऐसे उद्योग स्थापित करने जिनसे अधिक से अधिक लोगों को व्यवसाय प्राप्त हो, आदि कार्यो में व्यय किया जा सकता है।

अब कुछ चर्चा अपराधों पर भी करते हैं। जिस समाज में जितनी अज्ञानता, सामाजिक असमानता व बेरोजगारी आदि होगी वहां अपराध उतने ही अधिक होंगे। दण्ड व्यवस्था की खामियां व कमजोरियां भी अपराध को बढ़ाती हैं। हमारे शासकों का निष्पक्ष व्यवहार करना व अपराधियों को शीघ्रतिशीघ्र कठोर दण्ड दिलवाना भी अपराधों को समाप्त करने का एक तरीका है। सम्प्रति हम दुनियां के सभी देशों की न्याय व दण्ड व्यवस्था का अध्ययन कर अपनी न्याय व दण्ड व्यवस्था को समय के अनुरूप बनाने का कार्य कर सकते हैं। इसके साथ सरकार का शिक्षा पर भी ध्यान देना होगा। शिक्षा का सम्बंध संस्कारों से है। आज की स्कूली शिक्षा संस्कार विहीन है। इसे बदलना व इसमें परिवर्तन करना होगा जिससे यह समय के अनुरूप हो सकें। इस कार्य में महर्षि दयानन्द के शिक्षा विषयक विचारों से लाभ उठाया जा सकता है। हमने महर्षि के विचारों व सिद्धान्तों का अध्ययन करने का प्रयास किया है। इस अध्ययन से यह तथ्य सामने आता है कि यदि हमें देश की सर्वांगीण उन्नति करनी है तो उसमें संस्कारों, ईश्वरोपासना-संध्या, अग्निहोत्र-हवन, माता-पिता की सेवा, आचार्य की सेवा व सत्कार रूपी पूजा, सभी प्राणियों के प्रति मित्र भाव व उनके जीवनयापन व भोजन में यथासम्भव सेवा-सहायता, उनके प्रति पूर्ण अहिंसा का भाव, मांसाहार को एक अपराध मानकर भारतीय दण्ड संहिता में कठोर दण्ड का प्रावधान करना जिसका कारण प्राणियों को भी जीने का अधिकार है और किसी को उनके प्राण हरण या उन्हें पीड़ा पहुँचाने की अनुमति नहीं दी जा सकती, अतिथि जो विद्वान, ज्ञानी, किसी शिक्षा सम्बन्धी विषय के विशेषज्ञ हों, उनका भी अपने माता-पिता, सगे-सम्बन्धियों की तरह सम्मान, सेवा व आर्थिक सहायता आदि के अध्ययन व अभ्यास को शिक्षा व विद्याध्ययन व स्कूली पाठ्यक्रम से जोड़ना होगा। योग भी ईश्वर की उपासना का विधिपूर्वक करने को कहा जाता है। आसन योग के आठ अंगों में से एक अंग है। जब यह सब शिक्षा से जुड़ जायेंगे और सारे देश में अनिवार्य, नि:शुल्क तथा सबके लिए समान शिक्षा होगी, तो अपराध में गिरावट आना आरम्भ हो जायेगा। शिक्षा में पाखण्डों के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए। सरकार को चाहिए कि सरकारी व्यय पर गुरूकुलों को स्थापित कर उनका संचालन करें यह भी लोगों को संस्कार देने के साथ देश भर में आर्य समाज व व्यक्ति विशेषज्ञों द्वारा संचालित वैदिक गुरूकुलों की भी भरपूर आर्थिक सहायता करनी चाहिए जिससे देश में अच्छा वातावरण बनेगा और अपराध कम होंगे।

अपराध की प्रवृति का जन्म अज्ञान व अशिक्षा से ही प्राय: होता है। कुछ पूर्व संस्कारों की प्रवृति भी इसका कारण है। आज अपराधियों के गिरोह बने हुए हैं। वह युवकों को गुमराह कर उनकी अज्ञानता व विवेकहीनता का लाभ उठाते हैं। यदि सरकार में दृढ़ इच्छा शक्ति हो तो इस पर विजय प्राप्त की जा सकती है। आजकल कुछ कारण ऐसे हैं जिनमें सरकार भी अपराधों में कुछ कुछ लिप्त हो जाती है। सब जानते हैं कि शराब व धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकर है। यह सब होने पर भी सरकार इनके उत्पादन व निर्माण की अनुमति देती है और इनसे राजस्व प्राप्त करती है। किसी भी सभ्य समाज में इन दोनों चीजों का होना अनुचित व हानिकर होता है। इनके प्रयोग से मनुष्य का चरित्र गिरता है और उनमें अपराध की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है। जिसप्रकार से किसी बुरी आदत को छोड़ने में कठिनता होती है उसी प्रकार सरकार के लिए भी कठिनाई हो सकती है। हमें पता नहीं कि संसार के किन-किन देशों में पूर्ण या आंशिक नशाबन्दी है, कहीं है भी या नहीं। यदि कहीं भी नहीं है तो यह दुखद स्थिति है। यदि कहीं हो तो जहां नशाबन्दी है वहां के अपराध के आंकड़े व जहां नशाबन्दी नहीं है वहां के अपराध के आंकड़ों के आधार पर नशाबन्दी का अपराध से रिश्ते को जाना जा सकता है। सरकार का काम है कि मद्यनिषेध की नीति बनाकर सामाजिक संगठनों को स्वैच्छिक रूप से प्रचार द्वारा नशे के आदी व अभ्यस्त लोगों को इससे छुड़ाने के लिए प्रचार करें और नई पीढ़ी को नशे के नरक में जाने से रोकने के उपाय करे जिससे भविष्य में अपराधों में कमी हो सके और एक स्वस्थ, निरोग, बलवान, बुद्धिमान भारत बन सके।

अपराधियों के बारे में विचार करने पर एक तथ्य यह भी सामने आता है कि हमारे देश में अशिक्षा एवं निर्धनता व्याप्त है।कई लोग दो समय का अपना भोजन ही प्राप्त नहीं कर पाते हैं, फिर वह स्कूल जाने की तो सोच ही नहीं सकते। ऐसे लोगों में से कुछ अपराधी बन जाते हैं। ऐसे लोगों को सुधारने के लिए सरकार व पुलिस को नर्मी से काम लेना चाहिए। विवशता में किया गया अपराध -अपराध नहीं होता। दूसरे प्रकार के लोग वह हैं जो बचपन से ही धनी परिवारों से सम्बन्धित रहे हैं और अपने बुरे संस्कारों, बड़ी-बड़ी इच्छाओं की पूर्ति हेतु अपराध करते हैं। ऐसे लोगों के प्रति सरकार व पुलिस को सख्त होना चाहिए परन्तु अधिकांशत: ऐसे लोगों को कोई कुछ नहीं बिगाड़ता। इसका कारण उन लोगों के प्रभावशाली राजनीतिज्ञों से रसूकों का होना हैं, उनके पास पैसा है, वह अपने बुरे कर्मो को दबा सकते हैं। ऐसे लोग जब लम्बी अवधि के लिए जेल में होंगे तब जनता को न्याय मिल सकता है। अन्यथा आम व्यक्ति ऐसे लोगों का ही अपराधी सहयोगी बन जाता है। यहां मानव धर्म शास्त्र मनुस्मृति से भी प्रेरणा ली जा सकती है जहां कहा गया है कि जो जितना बड़ा, शिक्षित, धनवान, अधिकार सम्पन्न व प्रतिभाशाली हो उसे अशिक्षित व निर्धन की तुलना में अधिक व कई गुणा दण्ड मिलना चाहिए। महर्षि दयानन्द इस विचार व दण्ड व्यवस्था के समर्थक थे। इससे लाभ उठाया जा सकता है। यहां यह कहना भी उपयुक्त होगा कि यदि किसी अपराध को करने वाले को कड़ा दण्ड दिया जाता है तो अनेक लोग उस उदाहरण से डर कर अपराध करना छोड़ देते हैं या अपराध करने में प्रवृत्त नहीं होते। इससे एक व्यक्ति को दिय गया कठोर दण्ड समाज व देश से अनेकों अपराधियों व अपराध में प्रवृत्त होने वालों को अपराध से बचाता है, इसका भी दण्डाधिकारियों व विधि निर्माताओं को ध्यान रखना चाहिए।

भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का ज्ञान व अनुभव का स्तर ऐसा है कि वह सभी बातों को भली प्रकार से समझते हैं। वह एक गरीब परिवार से आये हैं। उन्होंने शून्य से शिखर तक का सफर किया है। देश के प्रत्येक वर्ग में ही नहीं अपितु सारे संसार में उनकी चर्चा है और उनके नाम का डंका सभी दिशाओं में बज रहा है। वह सारी दुनिया के आदर्श दिखाई दे रहे हैं। एक व्यक्ति 18 से 19 घंटे काम करने की घोषणा करता है, कहता है कि मैं पुरूषार्थ की पराकाष्ठा कर दूंगा, हमारी पहली प्राथमिकता गरीबों का उत्थान है, जीवन एक हर क्षण और शरीर का कण-कण देश व देशवासियों को समर्पित है। हम समझते हैं कि आज तक भारत में उनके जैसा प्रधानमंत्री नहीं हुआ जिसने ऐसी बातें की हों। उनसे देश को बहुत आशायें हैं। वह जो कह रहे हैं, हम भी समझते है कि वह अपने वचनों को पूरा करने में अवश्य ही सफल होंगे।

thearyasamaj.org

सोम रक्षण से हृदय व इन्द्रियां उत्तम बनावें

डा. अशोक आर्य

हम प्रभु की उपासना करत हुए अपने में सोम की रक्षा करते हुए अपने हृदय तथा अपनी इन्द्रियों को उत्तम बनावें। हम सदैव यज्ञशेष का ही सेवन करें। इस तथ्य को ऋग्वेद के अध्याय 3 सूक्त 43 के मंत्र संख्या 1 में इस प्रकार उपदेश किया गया है-

आ याह्यर्वाङुप वन्धुरेष्ठास्तावेदनु प्रदिव: सोमपेयम्।
प्रिया सखाया वि मुचोप बर्हिस्त्वामिमे हव्यवाहो हवन्ते।।

1. सोम रक्षण करें-

मंत्र उपदेश करते हुए हमें सन्देश दे रहा है कि हे इंद्र देव! आप की समीपता आपकी निकटता हमें पुरस्कृत करने वाली होती है। आप की समीपता पाकर हमारा उद्धार हो जाता है, हमारे गुणों की वृद्धि होती है तथा हमारे दोषों का नाश हो जाता है। आपकी निकटता को पा कर हमारा नाम भी गुणी लोगों में जुड़ जाता है। इस लिए हे प्रभु! हमें अपने निकट स्थान दीजिए, अपने समीप रखिये। हमारे अंदर वासनाओं का भारी भंडार भरा है। यह वासनाएं हमें आप के निकट नहीं आने देती। इसलिए हे पिता! हमें इन वासनाओं से शून्य करें, वासनाओं से रहित करके हमें शुद्ध पवित्र कीजिए। जब तक हमारे अन्दर वासनाएं भरी हैं, हम आपके निकट नहीं आ सकते। आप की निकटता पाने के लिए शुद्धता, पवित्रता का होना आवश्यक है। यह शुद्धता पवित्रता वासना युक्त शरीर में स्थानाभाव के कारण प्रवेश नहीं कर सकती। इसलिए हमारा वासना शून्य होना आवश्यक है। अत: हे परमपिता! हमें वासना शून्य कर शुद्ध और पवित्र करें तथा अपने निकट स्थान दें। हमें अपने निकट बैठने का अधिकारी बनावें। आप तो सदा शुद्ध, पवित्र, निर्मल हृदय में ही निवास करते हैं। इसलिए मुझे शुद्ध, पवित्र और निर्मल कर दीजिए।

हे प्रभु आप प्रकृष्ट ज्ञान का भंडार हैं। हमें भी अपने इस ज्ञान की कुछ बूंदे दीजिए। आप के इस प्रकृष्ट ज्ञान से ही सोम का शक्ति का पान संभव है। इसलिए हे पिता! हमें ऐसी शक्ति दो कि हम इस सोम का पान करने वाले बनें तथा सब प्रकार की शक्तियां हमारे अंदर निवास करें। हम जानते हैं कि आप ही हमारे सोम के रक्षण का साधन हैं। इसलिए हम ज्यों ज्यों आप के निकट आते जाते हैं उतना उतना ही सोम हमारे अंदर प्रवेश करता जाता है। इसलिए प्रभु! हमें ऐसी शक्ति दो कि हम आप क अति समीप आ सकें ताकि हमें सोम का आधिक्य मिल सके।

2. हमारी कर्मेन्द्रियाँ उतम कर्म करें:- हे पिता! आप की इस प्रीति के कारण ही, आपके इस स्नेह के कारण ही हमें अच्छे लगने वाले तथा हमारे साथ मिल कर कार्य करने वाले हमारे यह इन्द्रिय रूप घोड़े जो हैं इन्हें वासना शून्य करके ही खोलिए। ऐसा करने से ही हमारा हृदय वासनाओं से शून्य होकर शुद्ध तथा पवित्र हो जावेगा। इस प्रकार वासना शून्य हो कर हमारी ज्ञानेन्द्रियां कार्य करने लगेंगी। इन के कार्य में गति आवेगी, तेजी आवेगी। इस प्रकार इन ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से आप का कार्य करने लगेंगी तथा हम उत्तम ज्ञान को पाने में सफल होंगे।

3. त्याग पूर्ण उपभोग करें-इसप्रकार इस संसार के लोग उत्तम हृदय तथा प्रिय लगने वाले व इन इन्द्रियों को उत्तम प्रकार से चलाने वाले इन्द्रियों के घोड़ों को पाने के लिए हे पिता! आप की शरण में आ कर, आपकी निकटता को पाने के लिए अनेक प्रकार के यज्ञ व हवन आदि करते हैं। हव्य पदार्थों को हवन में डालते हुए आप को पुकारते हैं, आपका स्मरण करते हैं। आप का ही सब सामर्थ्य है। आप ही हमें उत्तम शक्ति प्राप्त करा सकते हैं। आप ही हमें उत्तम हृदय दिला सकते है तथा आप ही उत्तम इन्द्रियों को दिलाने वाले हैं किंतु यह सब आप उसे ही दिलाते हैं जो हृदय का वहन करने वाले होते हैं, जो प्रतिदिन दो काल हवन करते हैं, यज्ञ करते हैं, परोपकार करते हैं। इतना ही नहीं जो आप के बनाए हुए पदार्थों का त्यागपूर्वक उपभोग करते हों, उनका ही आप साथ देते हैं। इसलिए प्रभु! हम यह सब कर रहे हैं ताकि आप का सच्चा आशीर्वाद हमें प्राप्त हो सके, आपकी निकटता मिल सके।

आर्य उप प्रतिनिधि सभा बहराइच/ श्रावस्ती द्वारा आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

आर्य प्रतिनिध सभा बहराइच/श्रावस्ती आर्य समाज बहराइच एवं आर्यवीर दल देवीपाटन मण्डल के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 3 से 9 जून 14 तक आर्यवीर दल एवं शाखानायक स्तरीय प्रशिक्षण शिविर आर्य कन्या इण्टर कालेज बहराइच के प्रांगण में आयोजित किया गया। साथ ही 9 व 10 जून को रामपुर पैडा 11-12-13 जून अहरौरा 14-15 जून पयागपुर 20-21 जून का रामाडीह 22-23 जून सरजूपुरवा में वैदिक धर्मप्रचार प्रसार के अभियान के अन्तगर्त कार्यक्रम आयोजित किये गये है।

-चन्द्रकेतु आर्य

"गरूड़ पुराण की कथा, मृतक फोटो पूजन, गंगा में अस्थियां विसर्जन और आर्य पुरोहित कर्म।" लेख पर सुझाव

वेद प्रकाश गुप्ता

आर्य मित्र 01 अप्रैल, 2014 वर्ष 116 अंक 13 में उपरोक्त लेख छपा है। सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास-3 में "परित्याग योग्य ग्रंथों में समस्त पुराण, समस्त उप पुराण" आदि ग्रंथ लिखे हैं। अत: गरूण पुराण, मृतक फोटो पूजन, गंगा में अस्थियां विसर्जन आदि पर विचार करना वेदों, आर्य समाज के नियमों एवं किसी भी वैज्ञानिक अथवा आर्य शास्त्रों के आधार पर उचित एवं अनुमन्य नहीं है।

सत्यार्थ प्रकाश के विभिन्न समुल्लासों में सैकड़ो प्रश्न उत्तर व आर्य समाज के 10 नियमों को हजारों ग्रंथों के आधार पर लिखे गये हैं। यदि इसे ही सभी आर्य समाजी, विद्वान, पुरोहित आदि पढ़ें तो वह समसत गलत, अंधविश्वास, मूर्ति पूजा एवं उपरोक्त लेख के जैसे विचार से दूर रहेंगे, क्योंकि सत्यार्थ प्रकाश के विभिन्न समुल्लासों में लिखे प्रश्न उत्तर व आर्य समाज के 10 नियमों से इन समस्त बातों का निराकरण हो जाता है। इससे किसी दूसरे संप्रदायों के प्रथा, दिखावा, समारोहों की अथवा उनके परिवर्तित, संशोधित समारोहों जैसा इस लेख में प्रस्तावित किया गया है, की आवश्यकता नहीं है। इससे कोई भी पथ विचलित नहीं होगा। आर्य समाजियों व पुरोहितों के जो जो दोष इस लेख में लिखा है, वह नहीं होंगे। इससे ही आर्य समाजियों, आर्य सभाओं, संस्थाओं के झगड़े, कोर्ट, कचहरी दिवानी, पद, प्रतिष्ठा की लड़ाई आदि भी निश्चित रूप से समाप्त होंगे। सत्यार्थ प्रकाश न पढ़ने से हम, आर्य समाजी प्राय: अन्य धर्मो के परिपाटियों का नकल, अनुशरण कर परिवर्तित रूप में अपने नये नियम, पंथ परिपाटियां बनाने में लग जाते हैं जो गलत एवं त्रुटिपूर्ण है। इन उपरोक्त विवरणों से इस लेख के विभिन्न तथ्यों का निराकरण हो जाता है। इससे ही मृतक श्राद्ध, बरसी, चौबरसी, श्रद्धांजलि सभा करना एवं वृद्ध माता पिता की प्रस्तावित आरती, फूलों की माला पहनाने की आवश्यकता नहीं ही है। माता पिता गुरू अतिथि आदि के लिए हमारे जो जो कर्तव्य है उसे सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर ग्रहण किया जा सकता है। जीवित वृद्ध माता पिता आदि की सेवा करना, उनके उत्तम गुणों का सम्मान करना, उनका पालन करना ही वेद, आर्य समाज के अनुरूप है।

किसी की भी आरती उतारना, फूलों का माला पहनाना आदि पूर्णत: अवैदिक आर्य समाज के विरूद्ध है, और इसका किसी वेद, सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि आदि में वर्णन नहीं है एवं पर्यावरण के हित में नहीं है तथा विज्ञान सम्मत भी नहीं है। सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 11 से विदित है कि फूल तोड़ना पाप है, तो फूलों की माला पहनना तथा पहनाना भी पाप है। जिस कार्य से किसी का अहित होता है, वह कार्य पापमय होता है। एक फूल जितने दिन पेड़ में लगा रहता है, उतने दिन उसमें सुगंधित रसायन बनते रहते हैं। और वह हवा में फैल कर लाखों लोगों को नसिका से ग्रहण होकर लाभ देते रहते हैं। जिस क्षण यानी समय पर फूल को तोड़ा जाता है उसी क्षण यानी समय से सुगंध बनना बंद हो जाता है और उसका सड़न प्रक्रिया आरम्भ हो जाता है। इस तर्कपूर्ण तथ्य से सभी को सहमत होना चाहिए।

सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 11 पृष्ठ 259 पर मूर्ति पूजा के अधर्म होने के लिखित 15 हानियों में दसवां हानि -माता पिता आदि माननीयों का अपमान और पाषाणादि मूर्तियों का मान करके कृतघ्न हैं।" पन्द्रहवां हानि- "परमेश्वर ने पुष्पादि सुगंध, वायु -जल के दुर्गन्ध निवारण और आरोग्यता के लिये बनाये है, उनको पुजारी तोड़ कर नष्ट कर देते है। पूर्ण सुगंध के समय तक उसका सुगंध होता है, उसका नाश मध्य में ही कर देते है। पुष्पादि कीच के साथ मिल सड़ कर उल्टा दुर्गन्ध उत्पन्न करता है। इसलिए मूर्ति पूजा करने में पाप होता है। इत्यादि पापों का मूल कारण पाषाणादि मूर्ति पूजा भी है।" इस प्रकार माता पिता की आरती उतारना माला पहनाना भी पापमय होता है।

अस्तु समस्त आर्य समाजियों, विद्वानों, पुरोहितों, आर्य समाजों, सभाओं के गणमान्यों से निवेदन है कि वह सत्यार्थ प्रकाश विशेश कर समुल्लास 1, 2, 3, 7, 8, 11 एवं 12 का निरंतर बार बार स्वयं, परिवार वालों से एवं परिचितों से अध्ययन, वार्तायें, चर्चाएं अवश्य ही करते रहें क्योंकि इससे ही हजारों ग्रंथों के ज्ञान का सार मन मस्तिष्क में बना रहेगा और अवैदिक विचारों से सभी बचे रहेंगे।

ई-5, चन्दर अपार्टमेन्ट
कबीरमार्ग, लखनऊ

श्री ओम प्रकाश गुप्त दिवंगत

आर्य समाज के वयोवृद्ध कर्मठ कार्यकर्ती आर्य समाज शहर मुजफ्फरनगर के प्रधान श्री ओम प्रकाश गुप्त का दिनांक 28 मई को सायंकाल निधन हो गया। वे 92 वर्ष के थे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं। आर्य समाज के प्रति उनका समर्पण भाव इतनी दीर्घ आयु में भी नित्य पैदल चल कर आर्य समाज आना और कार्यो को देखने से ही प्रकट होता है।

उनकी विशिष्ट सेवाओं के लिए अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नई दिल्ली में उत्तर प्रदेश के वयोवृद्ध आर्य के रूप में उनकी विशिष्ट सेवाओं के लिए मारीशस के राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित किया गया था।

आर्य मित्र परिवार की ओर से दिवंगतात्मा की सद्गति एवं शोक संतप्त परिवार को मनःशान्ति व धैर्य प्रदान करने की प्रभु से प्रार्थना की गयी।

सम्पादक

thearyasamaj.org

1857 की महान क्रांति के नायक मंगल पाण्डेय

बंगाल की बैरकपुर छावनी की पलटन में एक युवा ब्राह्मण सैनिक मंगल पाण्डेय परम धार्मिक प्रवृत्ति का था। भीषण गर्मी का दिन था। एक दिन अंग्रेजों के दमदम स्थित कारतूस बनाने के कारखाने का कर्मचारी मातादीन बाल्मीकी इधर से गुजर रहा था। उसे भीषण प्यास लगी। उसने मंगल पाण्डेय से कहा ''पण्डित जी प्यास लगी है तनिक अपना पानी से भरा लोटा देना।'' उस जमाने में अस्पृश्यता की भावना हावी थी। उसने एक अछूत को अपना लोटा देने से इन्कार कर दिया।

मातादीन ने गुस्से से कहा 'बड़ा आया है ब्राह्मण का बेटा, जिन कारतूसों को तुम दांतों से तोड़ते हो, उनमें गाय व सुअर की चर्बी लगाई जाती है। उस समय तुम्हारा ब्राह्मणत्व कहां चला जाता है?' मातादीन के शब्दों ने मंगल पाण्डेय के हृदय को झकझोर डाला। उसने लोटा मातादीन को थमा दिया और अन्दर ही अन्दर अपने देश के शत्रु अंग्रेज शासन के विरूद्ध विद्रोह का निर्णय ले लिया।

29 मार्च 1987 के रविवार के दिन बैरकपुर की छावनी में भारतीय सैनिकों में विशेशज्ञ असन्तोष की लहर दौड़ी हुई थी। इस असन्तोष का कारण यह था कि अंग्रेजों ने यह निश्चय किया था कि जल्दी से जल्दी गोरों की रेजीमेंट बुलाकर बैरकपुर के हिन्दुस्तानी सिपाहियों की 19 नवम्बर रेजीमेंट के शस्त्रास्त्र छीन कर रेजीमेंट तोड़ दी जाए। बैरकपुर के हिन्दुस्तानी सैनिकों ने इस परिस्थिति पर विचार करने के लिए एक बैठक की।

बैठक में मंगल पाण्डे ने अपने साथियों के समक्ष ओजस्वी वाणी में कहा, भारत माता की गुलामी की बेड़ियों में जकड़ने के बाद अब यह गोरे हमारे धर्म को, गाय की चर्बी कारतूसों में लगाकर भ्रष्ट कर देना चाहते हैं?हम सब उसी माटी में पैदा हुए हैं कि जिसमें महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, गुरू गोविन्द सिंह जैसे बलिदानी वीरों ने जन्म लिया। हम वीरों की सन्तान हैं। अपना धर्म भ्रष्ट कदापि नहीं होने देंगे, भले ही हमें फाँसी की रस्सी पर झूलना पड़े।

मंगल पाण्डे की गर्जना सुनकर भारतीय सैनिकों की भुजाएं फड़क उठीं। भारतीय सैनिक प्रतिदिन की तरह परेड़ मैदान में गये। मंगल पाण्डे परेड में अपने पर नियंत्रण न रख सका। उसने अपने साथियों को सम्बोधित करत हुए कहा कि 'भाईयों! किस चिन्ता में पड़े हो?आओ और उठो, मैं आप लोगों को धर्म की सौगन्ध दिलाता हूँ। स्वाधीनता के लिए इन विधर्मी, अत्याचारी गोरों पर टूट पड़ो।' अंग्रेज सार्जेन्ट ह्यूसन ने मंगल पाण्डे का रौद्र रूप देखा तो कांप उठा। कांपते स्वर में उसने अन्य सैनिकों को मंगल पाण्डे को गिरफ्तार करने का आदेश दिया किन्तु कोई भी सैनिक मंगल पाण्डे को हाथ लगाने को तैयार नहीं हुआ। इसी बीच मंगल पाण्डे ने अंग्रेज अधिकारी पर गोली दाग दी। गोरा अफसर ह्यूसन वहीं ढेर हो गया। गोली की भीषण आवाज सुनकर ज्यों ही लेफ्टिनेंट बाघ वहां आया कि मंगल पाण्डे ने उसे भी गोली मार कर गिरा दिया। गोरे ने उठकर मंगल पाण्डे पर अपनी पिस्तौल से गोली दागने का प्रयास किया किंतु निशाना चूक गया।

विद्रोह की इस घटना से सारी छावनी में खलबली मच गई जनरल हियरसे क्रोध में भरकर परेड मैदान में आया और उसने सैनिकों से मंगल पाण्डे को गिरफ्तार कर लेने को कहा। सभी भारतीय सैनिक एक साथ चिल्ला उठे- हम वीर मंगल पाण्डे को किसी को हाथ नहीं लगाने देंगे। मंगल पाण्डे ने गोरों के चुंगल में फंसने की अपेक्षा स्वयं मर जाना अच्छा समझा। उन्होंने अपनी बन्दूक से अपने ही ऊपर गोली दाग दी और घायल होकर जमीन पर गिर पड़े।

घायल मंगल पाण्डे को अंग्रेजों ने अस्पताल भेज दिया। ठीक होने पर ब्रिटिश शासन के विरूद्ध खुला विद्रोह करने के आरोप में सैनिक अदालत में मुकदमा चलाया गया। मंगल पाण्डे ने स्पष्ट कहा कि 'जिन अंग्रेज अधिकारियों पर मैंने गोली चलाई है, उनसे मेरा किसी प्रकार का व्यक्तिगत द्वेष नहीं था, यह संघर्ष व्यक्ति का नहीं अपितु राष्ट्र का था तथा मेरा उद्देश्य देश को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त कराना था।'

सैनिक अदालत ने मंगल पाण्डे को फाँसी की सजा सुना दी। 8 अप्रैल 1857 के दिन वीर मंगल पाण्डे हंसते-हंसते फाँसी पर झूल गये। अमर बलिदानी वीर मंगल पाण्डे का नाम भारतीय स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में हमेशा अमर रहेगा।

बात सिर्फ शराब की नहीं

-डॉ. वेदप्रताप वैदिक

एक ताजा सर्वेक्षण से पता चला है कि भारत के कुछ नगरों के 45 प्रतिशत तक नौजवानों को शराब की लत पड़ गई है। दिल्ली सहित देश के ग्यारह शहरों के 2000 नौजवानों के सर्वेक्षण से ये आंकड़े मिले हैं। इन नौजवानों की उम्र 15 से 19 वर्ष है। पिछले 10 साल में इस लत का असर दुगुना हो गया है। कोई आश्चर्य नहीं कि अगले दस साल में देश के लगभग शत प्रतिशत नौजवान शराबखोर बन जाएं। जरा सोचें कि अगर हालात यही हो गई तो 21वीं सदी के भारत का क्या होगा?हम गर्व करते हैं कि आज नौजवानों की जितनी संख्या भारत में है दुनिया के किसी भी देश में नहीं है। भारत अगर विश्व शक्ति बनेगा तो इस युवा शक्ति के दम पर लेकिन अगर हमारी युवा शक्ति इन पश्चिमी लतों की शिकार बन गई तो भारत आज जिस बिंदु पर पहुंचा है उससे भी नीचे खिसक जाएगा। यह मामला सिर्फ शराब का ही नहीं है, शराब जैसी अन्य दर्जनों लतों का है, जो भारत के भद्रलोक की नसों में मीठे जहर की तरह फैलती जा रही हैं।

शराब के बढ़ते चलन के पीछे जो तर्क दिख रहे हैं, वे सतही हैं। उनके पीछे छिपे रहस्यों को हम अगर जान पायेंगे तो दूसरी आधुनिक बीमारियों के मूल तक पहुँचने में भी हमें आसानी होगी और उनका इलाज करना भी कठिन नहीं होगा। हमारे नौजवान शराब इसलिए पी रहे है कि उनके हाथ में ज्यादा पैसे आ रहे है वे अपना तनाव मिटाना चाहते हैं और माता पिता उन पर समुचित ध्यान नहीं दे पाते हैं। ये तीनों तर्क अपनी जगह ठीक हैं, लेकिन ये ऊपरी है। असली सवाल यही है कि हमारा नौजवान शराब को ही अपना एकमात्र त्राणदाता क्यों मान रहा है। और इस गंभीर भूल का पता चलने पर भी माता पिता और समाज की तरफ से कोई उचित कार्यवाही क्यों नहीं होती?इसका कारण यह है कि भौतिक विकास की दौड़ में पागल हुआ हमारा समाज बिल्कुल नकलची बनता जा रहा है। वह कहता है कि हम मामले में पश्चिम की नकल करो। अपना दिमाग गिरवी रख दो। अपने मूल्यों, आदर्श, अपनी परम्पराओं को दरी के नीचे सरका दो। यदि शराब पीना, मांस खाना, व्याभिचार करना, हिंसक बनना, कर्ज लेकर ऐश करना आदि को पश्चिमी समाज में बुरा नहीं माना जाता तो हम उसे बुरा क्यों माने?आधुनिक दिखने, प्रगतिशील होने, सेक्युलर बनने, भद्र लगने के लिए जो भी टोटके करने पड़ें वे हम करें। चूकें क्यों?जरा गौर करें कि सर्वेक्षण क्या कहता हैं?

उसके अनुसार हमारे नौजवान ज्यादा शराब कब पीते हैं?क्रिसमस या वेलेंटाइन डे के दिन ये दोनों त्यौहार क्या भारतीय हैं?हमारे ईसाई भाई क्रिसमस मनायें यह तो समझ में आता है, लेकिन जो शराबखोरी करते हैं, उन आम नौजवानों को ईसा मसीह या क्रिसमस से क्या लेना देना है?शराब पीना ही उनका क्रिसमस है और वह इसलिए है कि क्रिसमस पश्चिमी समाज का त्यौहार है। होली और दीपावली पर उन्हें खुमारी नहीं चढ़ती, लेकिन क्रिसमस पर चढ़ती है, यह किस सत्य का प्रमाण हैं?

दिमागी गुलामी की यही गुलामी वेलेंटाइन डे पर प्रकट होती है। जिन भारतीय नौजवानों को महात्मा वेलेंटाइन की दंतकथा का भी सही सही पता नहीं है वे आखिर वेलेंटाइन डे से भी सौगुना अधिक मादक बसंतोत्सव है, लेकिन वे उससे अपरिचित है?क्यों हैं?इसीलिए कि वेलेंटाइन डे पश्चिमी है, आयातित है और आधुनिक है। शराब भी वे प्रायः विदेशी ही पीते हैं। ठर्रा पी लें तो उन्हें दारूकुट्टा या पियक्कड़ कहने लगेंगे। यह कड़वी बात उन्हें कोई कहता भी नहीं है लेकिन सच्चाई यही हैं कि इन नौजवानों को अपने भारतीय होने पर गर्व नहीं है। वे नकलची बने रहने में गर्व महसूस करते हैं।

अगर ऐसा नहीं है तो मैं पूछता हूँ कि आज भारत के 90 प्रतिशत से अधिक शहरी नौजवान पैंट शर्ट क्यों पहनते हैं?टाई क्यों लगाते हैं?उन्हें कुर्ता पायजामा पहनने में शर्म क्यों आती हैं?स्कूल-कॉलेजों में कोई भी अध्यापक और छात्र धोती पहने क्यों नहीं दिखता?कोई वेश-भूषा कैसी भी पहने, उसमें कोई बुराई नहीं है, लेकिन कोई अपनी स्वाभाविक वेश-भूषा, पारम्परिक वेश-भूषा को तो हीन भावन से देखें और अपने पुराने मालिकों की वेश-भूषा को गुलामों की तरह दैवीय दर्जा देने लगे तो उसे आप क्या कहेंगे?ठंडे देशों में शराब का प्रचलन है और टाई समेत थ्री पीस सूट पहने जाते हैं, लेकिन भारत जैसे गर्म देश में भी इन चीजों से चिपके रहना कौन सी आधुनिकता है?खुद को असुविधा में डालकर नकलची बने रहना तो काफी निचले दर्जे की गुलामी है। यदि ऐसी गुलामी भारत में बढ़ती चली जाए तो उसके सम्पन्न होने पर लानत है।

यहां मामला शराब और वेश-भूषा का ही नहीं है, सबसे गंभीर मामला तो भाषा का है। आजादी के 63 साल बाद भी अंग्रेजी इस देश की पटरानी बनी हुई है और हिन्दी नौकरानी। किसी को गुस्सा तक नहीं आता। बुरा तक नहीं लगता। राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री से लेकर बाबुओं और चपरासियों ने भी अंग्रेजी की गुलामी का व्रत धारण कर रखा है। शराब की गुलामी से भी ज्यादा खतरनाक अंग्रेजी की गुलामी है। विदेशी भाषाओं और ज्ञान विज्ञान से फायदा उठाने का मैं जबर्दस्त समर्थक हूँ, लेकिन अपनी माँ पर हम थूकें और दूसरे की मां के मस्तक पर तिलक लगाएं, इससे बढ़कर दुष्टता क्या हो सकती हैं?यह दुष्टता भारत में शिष्टता कहलाती है। यदि आप अंग्रेजी नहीं बोल पाएं तो इस देश में आपको कोई शिष्ट और सभ्य ही नहीं मानेगा। देखा आपने, कैसा सूक्ष्म सूत्र जोड़ रहा है शराब, पैंट शर्ट और अंग्रेजी को। हम यह भूल जाते हैं कि शराब ने रोमन और गुलाम जैसे साम्राज्यों की जड़ों में मठ्ठा डाल दिया और विदेशी भाषा के जरिये आज तक दुनिया का कोई भी राष्ट्र महाशक्ति नहीं बना, लेकिन इन मिथ्या विश्वासों को हम बंदरिया के बच्चे की तरह छाती से चिपकाये है। दुनिया में हमारे जैसा गुलाम देश कौन सा हैं?

इस गुलामी को बढ़ाने में कामनवेल्थ का योगदान अप्रतिम है। कॉमनवेल्थ को क्या हमने कभी कॉमन बनाने की आवाज उठाई?उसका स्थायी स्वामी ब्रिटेन ही क्यों हैं?हर दूसरे तीसरे साल उसका अध्यक्ष क्यों नहीं बदलता?गुट निरपेक्ष आंदोलन की तरह या सुरक्षा परिषद की तरह?उसकी भाषा अंग्रेजी क्यों हैं?हिन्दी क्यों नहीं?कॉमनवेल्थ के दर्जनों देश मिलकर भी भारत के बराबर नहीं है। हिन्दी दुनिया के सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। दुर्भाग्य तो यह है कि आज देश में हमारे राजनीतिक दल और यहां तक कि साधु महात्मा भी शक्ति संधान और पैसा महान में उलझ गये हैं। दयानन्द, गांधी और लोहिया की तरह कोई आन्दोलन नहीं चला रहे, जो भारत के भोजन, भजन, भाषा, भूषा और भेषज को सही पटरी पर लाये। इस पंचमकार का आह्वान अगर भारत नहीं करेगा तो पंचमकार, मद्य, मांस, मीन, मुद्रा, मैथुन का मार्ग तो पश्चिम ने हमें दिखा ही रखा है पश्चिम तो अब उठकर गिर रहा है, हम उठे बिना ही गिर जायेंगे।

thearyasamaj.org

"महर्षि का वेद भाष्य तर्क व विज्ञान पर आधारित है"

-खुशहाल चन्द आर्य

यह लेख मैंने आदरणीय डॉ. सोमदेव जी शास्त्री द्वारा लिखित यजुर्वेद सन्देश पुस्तिका से उद्घृत किया है। डॉ. साहब आर्य जगत् के एक उच्च कोटि के प्रतिष्ठित वैदिक विद्वान हैं। सभी आर्यजन इनको श्रद्धा व सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। प्रसन्नता की बात यह है कि डॉ. साहब मेरे परिवार से विशेष रूप से जुड़े हुए हैं। मेरे परिवार वालों ने मेरे स्व. पिता गोविन्द राम आर्य (प्रधान जी) की पुण्य स्मृति में "आदर्श आर्य प्रवर" शीर्षक की पुस्तक छपवाई थी। उसका सम्पादन डॉ. साहब ने ही किया था, जिसकी सभी लोगों ने बड़ी प्रशंसा की थी। इसी पुस्तक के उद्घाटन के समय सोमदेव जी मेरे गाँव देवराला (हरियाणा) भी गये थे। मेरे पूरे परिवार से इनका घनिष्ठ संबंध है। कलकत्ता में मेरे धर को भी इन्होंने कई बार पवित्र किया है। इस प्रकार ये मेरे परिवार से पूर्ण परिचित हैं।

इनकी पुस्तक "यजुर्वेद सन्देश" को पढ़ने से इनकी प्रकाण्ड विद्वता का परिचय मिल जाता है। इस पुस्तक के पढ़ने से यह सुस्पष्ट हो जाता है कि महर्षि देव दयानन्द को वेद भाष्य अन्य भाष्यकारों से कहीं अधिक सार्थक और सही है जो तर्क और विज्ञान की कसौटी पर खरा उतरता है। पहले के भाष्यकार वेदों में हिंसा, इतिहास तथा केवल कर्म काण्ड को ही मानते थे। परन्तु महर्षि ने वेदों के सही अर्थ लगाकर यह बतला दिया कि वेदों में कही पर भी हिंसा नही है और न ही इनमें इतिहास है ओर वेद केवल कर्म काण्ड के ही नहीं बल्कि सब सत्य विद्याओं के ग्रंथ हैं। महर्षि ने यह सिद्ध करके मानव मात्र का बड़ा उपकार व कल्याण किया है। इसी भावना से प्रेरित होकर मैंने भी जो लेख लिखा है इसे पढ़ कर मैं आशा करता हूँ कि सुधि पाठक गण वेदों के सही स्वरूप को समझ पायेंगे। यही मेरी उपलब्धि होगी।

लेख इस भांति है।

1. मध्यकालीन वेद भाष्यकार :- मध्यकाल में अनेक वेद भाष्यकार हुए हैं जिन्होंने वेदों का या वेद के कुछ हिस्सों का भाष्य किया है। विक्रम संवत् 687 में स्कन्द स्वामी ने ऋग्वेद के प्रथम अष्टक के 4-5 सूक्तों का अधियाज्ञिक प्रक्रिया (कर्मकाण्ड परक) वेद भाष्य किया। स्कन्द स्वामी के समय ही उद्गीथ हुए हैं। उन्होंने ऋग्वेद के दसवें मण्डल के पांचवे सूक्त के चौथे मंत्र से 86 सूक्त के 6 मंत्र तक वेद भाष्य किया। यह भाष्य भी कर्म काण्ड परक ही है। विक्रम संवत की 12वीं शताब्दी में बेंकट माधव ने ऋग्वेद का अधियाज्ञिक प्रक्रिया के अनुसार भाष्य किया। विक्रम संवत् की 13वीं शताब्दी में आत्मानन्द ने ऋग्वेद के अस्यवामीय सूक्त (ऋग्वेद के पहले मण्डल के 164 सूक्त) का आध्यात्मिक प्रक्रियानुसार भाष्य किया। आनन्दतीर्थ ने (विक्रम संवत् 1255-1335) ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के चालीस सूक्तों का आध्यात्मिक भाष्य किया। सायणाचार्य (विक्रम संवत् 1372-1442) ने सम्पूर्ण ऋग्वेद का (बाल खिल्य सूक्तों को छोड़कर) आधियतिक प्रक्रिया परक भाष्य किया। कहीं कहीं आध्यात्मिक प्रक्रियानुसार अर्थ भी किये हैं।

उव्वट (विक्रम संवत् 1100) ने यजुर्वेद का भाष्य किया जो कर्मकाण्ड परक भाष्य है। महीधर (विक्रम संवत् 1645) ने भी यजुर्वेद का भाष्य याज्ञिक प्रक्रियानुसार दिया। इन दोनों भाष्यकारों ने यजुर्वेद के प्रत्येक मंत्र को यज्ञ में होने वाली प्रक्रियाओं के साथ जोड़ा/गोमेघ, अवश्मेघादि शब्दादि का अनर्थ करके पशु हिंसा जैसा जघन्य कृत्य को यजुर्वेद के मंत्रों द्वारा प्रतिपादित किया। यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा का भाष्य भट्ट भास्कर ने विक्रम संवत् 1100 में किया तथा इसी शाखा का सायण ने भी भाष्य किया।

सामवेद का भाष्य भरत स्वामी ने विक्रम संवत् 1360 के लगभग किया कर्म काण्ड परक अर्थो के साथ साथ कही कहीं अध्यात्म परक अर्थ भी किये। माधव जो विक्रम की सातवीं शताब्दी में हुए, उन्होंने भी अपने भाष्य में ब्राह्मण ग्रंथों के प्रमाण भी उद्घृत कियें। भरत स्वामी और माधव के अतिरिक्त सायण ने भी सामवेद का भाष्य किया है। अथर्ववेद का मध्यकालीन आचार्यो में केवल सायण ने ही भाष्य किया। इसमें भी उन्होंने मंत्र, तंत्र, जादू-टोना, कृत्य, अभिचार (हिंसा) आदि कृत्यों का वर्णन भाष्य करते हुए किया।

मध्यकालीन सभी आचार्यो ने अपने भाष्यों में मुख्य रूप से याज्ञिक कर्मकाण्ड का वर्णन किया। इसमें भी पशु हिंसा, मांस भक्षण, जादू टोना, मारण उच्चाटन, अग्नि-इन्द्रादि देवताओं का सशरीर स्वर्ग में निवास, उनका परिवार सहित सुख ऐश्वर्यो को भोगना, यज्ञ की छवि (आहुति) का भक्षण करने के लिए स्वर्ग से अदृश्य रूप में यज्ञ स्थल पर आना और यजमान को आशीर्वाद देना, मरने के बाद यजमान को स्वर्ग में ले जाना आदि अनेक मिथ्या विचार धारा वेद के नाम पर प्रचलित करने का कार्य किया, जिससे सामान्य जनता वेदों से विमुख हो गई। वेद केवल कुछ व्यक्ति विशेष (ब्राह्मणों) के लिए ही हैं। जो याज्ञिक कर्म काण्ड करते हैं, इसी प्रकार वेद केवल याज्ञिक कर्मकाण्ड के लिये ही उपयोगी हैं। यह प्रसिद्ध कर दिया। इस प्रकार जन सामान्य की वेद से रूचि हट गई। वेद कथा, वेद प्रवचन प्रचारादि के स्थान पर भागवत-गीता, उपनिषद और सत्यनारायण आदि की कथा तथा प्रवचन आदि प्रचलित हो गये।

पाश्चात्य विद्वानः- आधुनिक युग (18वीं 19वीं शताब्दी) में वेदों पर भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों के विद्वानों ने भी कार्य किया। सन् 1850 में डा. एच.एच. विल्सन ने सायण भाष्य के आधार पर ऋग्वेद का अंग्रेजी में अनुवाद किया। प्रो. मैक्समूलर ने रूद्र, मारूत, वायु आदि देवताओं के सूक्तों का अंग्रेजी में अनुवाद किया तथा वेद की संहिताओं के तथा सायण भाष्य के सम्पादन का भी परिश्रम साध्य कार्य किया। जर्मन भाषा में ऋग्वेद का पद्यानुवाद जर्मन विद्वान ग्रासमान ने सन् 1876-77 में किया था। इसी प्रकार जर्मन विद्वान ए.लुडविग, एच, ओल्डनवर्ग ने ऋग्वेद का जर्मन अनुवाद किया। आर. टी.एच. ग्रिफिथ ने (सन्1881-1898) चारों वेदों का अंग्रेजी में पद्यानुवाद किया। लांगल्वा नामक फ्रांसीसी विद्वान ने फ्रेंच भाषा में ऋग्वेद का अनुवाद किया। डॉ. कीथ ने तैत्तिरीय संहिता का अंग्रेजी में अनुवाद किया। थियोडोर बेन्फे ने (सन 1848 में) सामवेद (कौथुम शाखा) का जर्मन अनुवाद किया। अथर्ववेद (शौनक संहिता) का डब्लू. एच. ने तथा अथर्ववेद (पैप्पलाद शाखा) का ब्लूम फील्ड ने अंग्रेजी अनुवाद करके सन् 1901 में प्रकाशित किया। इस प्रकार विदेशों में वेदों पर विगत दो सौ वर्षों से बहुत कार्य हुआ।

महर्षि दयानन्द- महर्षि दयानन्द ने बहुत थोड़े समय में, वेदों का प्रचार-प्रसार करना, ईश्वर, धर्म और वेदों के नाम पर प्रचलित पाखण्ड और अंधविश्वास का खण्डन करना, शंका समाधान करना, शास्त्रार्थ करना, स्वार्थी लोगों द्वारा उपस्थित विध्न बाधाओं का सहन करना, दिन-रात प्रचार करना, छोटे बड़े 43 ग्रंथों को लिखना, अपने आप में एक अद्भुत कार्य उन्होंने किया। स्वार्थी और मूर्ख व्यक्तियों ने उन पर ईंट-पत्थर फेंके, खानें में विष मिलाया, कुटिया में आग लगाई, ध्यान में बैठे हुए को नदी में फेंका आदि दुष्कृत्य किये किंतु गुरू भक्त एवं प्रभू विश्वासी देव दयानन्द अपने लक्ष्य से कभी विचलित नहीं हुए और गुरू को दिया वचन उन्होंने आजीवन निभाया।

मध्यकालीन आचार्यो ने यजुर्वेद का भाष्य करते हुए उव्वट और महीधर ने गोमेघ, अश्वमेघ आदि शब्दों को लेकर गाय, घोड़ा, नर आदि की हिंसा का विस्तार से वर्णन किया। यजुर्वेद के छठें अध्याय के 7 से 22वें मंत्र तक पशु को बांधना, देवता के लिए उसका वध करना, आहुति देने का भयानक चित्रण किया है। साथ ही यह भी प्रचलित कर दिया कि यज्ञ के लिए की गयी हिंसा, हिंसा नहीं होती। ऐसा कुकृत्य वेदों के साथ किया गया, जिसे पढ़कर विवेकशील व्यक्ति वेदों से विमुख हो गये। महर्षि दयानन्द ने वेदों के प्रमाण देकर यज्ञों में हिंसा का घोर विरोध किया। उन्होंने यजुर्वेद के प्रथम मंत्र में "पशू ने पाहि"अर्थ गाय की हिंसा नहीं अपितु इंन्द्रियों पर नियंत्रण रखन है। अश्वमेघ का अर्थ घोड़े को मारना नहीं अपितु प्रजा का पालन करना है। मृतक शरीर अर्थात् शव का अन्त्येष्टि संस्कार को नरमेघ बताया। साथ ही यह भी बताया कि इनकी हिंसा करने वाले को सीसे की गोली से मार देना चाहिए। वेदों के नाम पर पशु हिंसा के कलंक को समाप्त करने का अद्भुत कार्य महर्षि ने अपने वेद-भाष्य के द्वारा किया। साथ ही वेदों को ईश्वरीय ज्ञान तथा सब सत्य विद्याओं की पुस्तक बतलाकर वेदों के महत्व को बढाया और वेदों को केवल कर्मकाण्ड तक ही सीमित नहीं रखा।

thearyasamaj.org

आर्य समाज गुधनी का वार्षिकोत्सव

आर्य सामज गुधनी खैंसारा बिल्सी का 112वां वार्षिकोत्सव दिनांक 11 से 15 जून 14 तक प्राइमरी पाठशाला गुधनी में होगा।

इस अवसर पर नित्य प्रातः 7 से 11 बजे तक वेद पारायण यज्ञ 21 कुण्डों में होगा, तथा रात्रि 7:30 से 11 बजे तक भजन व उपदेश होंगे। दिनांक 11 जून 14 को शोभा यात्रा प्रातः 11 बजे से निकाली जायेगी तथा 15 जून को अपरान्ह 1 बजे से भण्डारा का भी आयोजन है।

उत्सव में आर्य सन्यासी स्वामी शिवानन्द, आचार्य स्वदेश प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. श्री माया प्रकाश त्यागी, आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री, आचार्या अंजलि आर्या एवं पं0 सतीश सत्यम् के उपदेश व भजन सुनने का सुयोग्य मिलेगा।

आचार्य संजीव 'रूप', निदेशक

डा0 आचार्या पुष्पावली का देहावसान

आर्यजगत की विदुषी मातृ मन्दिर कन्या गुरूकुल की संस्थापिका आचार्या डा. पुष्पावती का 2 मई को कुछ कालिक अस्वस्थता के बाद रमन मेडिकल कालेज, वाराणसी में निधन हो गया। दिनांक 3 मई को मातृ मन्दिर से शव यात्रा निकाली गई जिसमें गुरूकुल की छात्राओं ने वेदपाठ किया। शव का दाह संस्कार हरिश्चन्द्र घाट पर वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। अंत्येष्टि में आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान ब्रह्मचारी राज सिंह एवं मंत्री श्री विनय आर्य ने भी भाग लिया।

प्रान्तीय वेद प्रचार प्रभारी, जिला वेद प्रचार प्रभारी, पदाधिकारी/अंतरंग सभा

आप सभी को ज्ञात है कि आचार्य स्वदेश की (प्रधान आ.प्र.स.) द्वारा जारी पत्रक के अनुसार जून माह तक रजिस्टर्ड आर्य समाजों में वार्षिकोत्सव होने हैं।

अतः जिन जिन जिलों में आर्य समाज के अभी तक वेद प्रचार का कार्य नहीं हो पाया है, वहां-वहां पर उक्त सभी अधिकारी अपनी व्यवस्था से जिला सभा के प्रधानमंत्री का सहयोग लेकर प्रचार कार्य अवश्य पूर्ण करें, जिससे मुझे सभा कार्यालय में सूचना देना संभव हो सके। अपनी अपनी जिलों की तिथि निर्धारित करके आं मित्र में छापने हेतु भेज दें, जिससे अन्यों को भी प्रेरणा प्राप्त हो सकें।समय समय पर मुझसे सम्पर्क करते रहें। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आने वाले समय में आप सभी के सहयोग से हरेक जिलों में नई आर्य समाजों को बनाया जायेगा। वेद प्रचार कार्य में अगर कहीं भी बाधा आ रही हो तो मुझे तत्काल फोन करें।

नरेन्द्र देव वानप्रस्थ

जिला प्रचार प्रभारी

1.	आजमगढ़	सत्यनारायण आर्य
2.	मऊ	हरिश्चन्द्र सिंह
3.	बलिया	कमला सिंह
4.	वाराणसी	प्रमोद आर्य
5.	चंदौली	शशिकान्त आर्य
6.	गाजीपुर	हरिनाथ यादव
7.	जौनपुर	अमित आर्य
8.	मिर्जापुर	गिरिजा सिंह
9.	भदोही	रामफेस शास्त्री
10.	सोनभद्र	शम्भू आर्य
11.	गोरखपुर	श्री राम आर्य
12.	महाराजगंज	श्याम नरायन
13.	देवरिया	रजनीश
14.	कुशीनगर	प्रेमी
15.	बस्ती	ओम प्रकाश आर्य
16.	संत कबीर नगर	अशोक आर्य
17.	गोण्डा	सत्य प्रकाश आर्य
18.	बलरामपुर	अशोक तिवारी
19.	बहराईच	सत्य नारायण
20.	श्रावस्ती	अखिलेश मिश्र
21.	फैजाबाद	विश्वदेव दानप्रस्थी
22.	सिद्धार्थ नगर	अशोक कुमार आर्य
23.	अम्बेडकर नगर	आचार्य मुकेश
24.	सुल्तानपुर	ओंकार सिंह
25.	बाराबंकी	टी.एन.वर्मा
26.	लखनऊ	नवनीत निगम
27.	अमरोहा	ओमपाल आर्य
28.	प्रतापगढ़	महेन्द्र आर्य
29.	इलाहाबाद	सोममुनि

वेद प्रचार अधिष्ठाता
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.
मोबाइल-9452418122

आर्य उप प्रतिनिधि सभा एटा के तत्वावधान में 43 दिवसीय यज्ञ व वेदकथा

आर्य उप प्रतिनिधि एटा के तत्वावधान में दिनांक 18 मई से 43 दिवसीय यज्ञ एवं वेद कथा का आयोजन जिले के विविध अंचलों पर आयोजित किया गया है। इस यज्ञ व वेद कथा का समापन 29 जून को होगा। इस अवसर पर देश के अनेक आर्य विद्वानों के भजन व उपदेशों का लाभ मिलेगा।

नरेन्द्र मोदी जी सुनो

–पं. नन्दलाल निर्भय पत्रकार, भजनोपदेशक
आर्य सदन बहीन जनपद पलवल (हरियाणा)
चलभाष क्रमांक-9813845774

देशभक्त, धर्मात्मा, चरित्रवान, विद्वान।
जनसेवी, त्यागी, विनम्र, शीलवन्त इंसान।।
शीलवन्त इंसान, सत्यवादी, तपधारी।
वीर, साहसी, बली, मेहनती, परोपकारी।
करे सुजन की मदद, दण्ड दुष्टों को देता।
ऐसा नेता प्यार, सकल जगत का पा लेता।।
नरेन्द्र मोदी जी सुनो! आप लगाकर ध्यान।
भारत के तुम बन गये, अब मंत्री प्रधान।।
अब मंत्री प्रधान, देश है दुखी हमारा।
अपमानित हर तरह, आज है भारत प्यारा।
नेताओं ने जात-पात का, रोग बढ़ाया।
देशद्रोही भ्रष्ट जनों को गले लगाया।।
ऋषियों के इस देश में गुण्डों का जोर।
थानों के मालिक बने जालिम डाकू चोर।।
जालिम डाकू चोर मौज अब मार रहे हैं।
नाव देश की डुबा, बीच मझधार रहे हैं।
अगर रहा यह हाल, देश यह मिट जायेगा।
हम सबको नासमझ सकल जग बतलाएगा।।
हे नेता जी आपका नरेन्द्र मोदी नाम।
जैसा सुंदर नाम है ऐसे करना काम।
ऐसे करना काम, वेद-पथ को अपनाना।
राम, कृष्ण, चाणक्य, शिवाजी बन दिखलाना।
सबके लिए समान, आप कानून बनाना।
क्षेत्रवाद का, वर्गवाद का, भेद मिटाना।।
बल्लभ भाई पटेल का मान आप आदर्श
लाल बहादुर शास्त्री बन करना उत्कर्ष।
बन करना उत्कर्ष, देश की शान बढ़ाना।
बन कर वीर सुभाष, जगत में नाम कमाना।
भारतवासी साथ, आपके हैं प्रिय नेता।
निर्भय आगे बढ़ो, बहादुर वीर विजेता।।

मुम्बई में आदर्श जीवन निर्माण शिविर सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के तत्वावधान में आर्य वीर दल मुम्बई ने "आदर्श जीवन निर्माण शिविर" का आयोजन रविवार दिनांक 11 से रविवार दिनांक 18 मई 2014 तक आर्य समाज सान्ताक्रूज में किया। यज्ञ के उपरान्त शिविर का उद्घाटन एवं ध्वजारोहण प्रसिद्ध उद्योगपति एवं आर्यश्रेष्ठी श्री लद्धाभाई विश्राम पटेल, घाटकोपर के करकमलों से हुआ। इस शिविर के मुख्य शिक्षक श्री धर्मेन्द्र आर्य मुम्बई, श्री प्रशान्त आर्य अलीगढ़ एवं श्री हरेन्द्र आर्य मुजफ्फरनगर थे। मुम्बई के सभी आर्य समाजों के कर्मठ कार्यकर्ताओं ने सक्रिय रूप से भाग लेते हुए बच्चों का उत्साहवर्धन किया। आदर्श जीवन निर्माण शिविर के अन्तर्गत शारीरिक, आत्मिक व बौद्धिक उन्नति के लिए अनेक विद्वानों को आमन्त्रित करके विभिन्न विषयों पर मार्ग दर्शन दिया गया यथा-उत्तम विद्यार्थी बनाना, स्मरणशक्ति बढ़ाना, व्यक्तित्व विकास, आत्मविश्वास पैदा करना, तनाव से मुक्ति, योग प्राणायाम, ध्यान आसन, स्वस्थ निरोग रहने के प्रभावी सूत्रों पर तथा सैद्धान्तिक, सारगर्भित एवं प्रभावोत्पादक प्रवचनों से शिविरार्थियों को लाभान्वित किया गया।

thearyasamaj.org

यजुर्वेद पारायण यज्ञ एवं वेदकथा

स्थान ग्राम मई जि. हाथरस में सुश्री ओमवती आर्य नन्दलाल आर्य प्रहलाद सिंह आर्य के परिवार की ओर से दिनांक 27 से 31 मई तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ ब्रह्मचारी पुष्पेन्द्र आर्य गुरूकुल टंकारा के पौरोहित्य में सम्पन्न होआ। जिसमें नित्य प्रात: 7:30 बजे से 10:30 बजे तक यज्ञ भजन प्रवचन अपराह्न 1 बजे से 4 बजे वेद कथा एवं रात्रि 8 से 10 बजे तक भजन प्रवचन हुये।

रमाकान्त सारस्वत
संयोजक

आर्य विचारधाराः नई पीढ़ी को जोड़ने का एक सशक्त माध्यम

-महाशय धर्मपाल

कोटा, 28 अप्रैल। समाज को एक सूत्र में बांधकर साथ चलने से निर्धारित लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। मन में समाज के प्रति सेवा करने की लगन व इच्छा शक्ति हो तो हम जरूरतमंदों की सेवा करके उन्हें अपने साथ जोड़ सकते हैं। उक्त विचार एम.डी.एच. के चेयरमैन महाशय धर्मपाल आर्य ने दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन की मीडिया एलबम का विमोचन करते हुए व्यक्त किए।

सभी समस्याओं का समाधान है वेदों में

कोटा, 25 अप्रैल। वेदों में वर्तमान युग में व्याप्त सभी समस्याओं का समाधान विद्यमान है। परमपिता परमेश्वर ने मनुष्य के लिए उपयोगी समस्त ज्ञान वेदों में प्रदान किया है। यह बात आज मुख्य अतिथि डॉ. अशोक कुमार आर्य अमरोहा उत्तर प्रदेश से पधारे वैदिक विद्वान ने आर्य समाज विज्ञान नगर के सभागार में आयोजित वैदिक सत्संग में कही। उन्होंने कहा कि परिवार तथा समाज में समन्वय, विश्व शांति एवं विश्व बंधुत्व जैसे विषयों में जो गंभीर चिंतन वेदों में उपलब्ध है वह अन्यत्र नहीं है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आर्य समाज जिला सभा के प्रधान अर्जुनदेव चड्डा ने कहा कि आर्य समाज सेवा कर संसार के उपकार का संदेश देता है। सभी प्राणियों की उन्नति चाहता है। समाज में व्याप्त भ्रान्तियों का निवारण कर सकारात्मक सोच केवल आर्य समाज ही दे सकता है।

-राकेश चड्ढा
मंत्री,
आर्य समाज विज्ञान नगर, कोटा

माता श्रीमती चन्द्र प्रभा मेहता की स्मृति में

आर्य समाज विभव नगर, आगरा की संस्थापिका आर्य उ.प्र.प्रतिनिधि सभा, आगरा की संरक्षक पूजनीया माता श्रीमती चन्द्र प्रभा मेहता का दिनाँक 11.03.14 को हमारे निवास स्थान आर्य भवन ट्रस्ट, विभव नगर, आगरा में निधन हो गया है। वे एक कर्मठ आर्यकर्ती थी। वे महिला आर्य समाज नामनेर आगरा की कई वर्ष प्रधान रहीं। विभव नगर में आर्य समाज मन्दिर के निर्माण का गुरूतर भार बड़ी ही निष्ठा से निभाया। वे वर्षो आर्य समाज विभव नगर की भी प्रधान रहीं। वे स्वाधीनता संग्राम में छोटी अवस्था में जगह जगह क्रांतिकारी पत्रों का वितरण बड़े मनोयोग से करती थी। कई बार पुलिस ने उन्हें इस कार्य के करने में गिरफ्तार किया, फिर मीलों दूर जाकर उन्हें छोड़ा परन्तु वे पूरे उत्साह से अपना कार्य करती रही।

उनके निधन से हमारे परिवार तथा आर्य समाज आगरा ने अपना एक अमूल्य रत्न खो दिया है।

इस दुखद घड़ी पर आर्य मित्र परिवार की ओर से दिवंगात्मा की सद्गति एवं दु:खी परिजनों को मन: शान्ति व धैर्य प्रदान करने की प्रभू से प्रार्थना है।

-सम्पादक

आर्य समाज का परिन्डे बांधो अभियान पक्षियों के लिए परिन्डे बांधना परोपकारी कार्य

कोटा, 12 मई, पक्षियों के लिए पानी के परिन्डे बांधना, लगाना व रखना व उसमें नियमित पानी व दाना डालना परोपकारी कार्य है। उक्त विचार आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने रंगबाड़ी योजना क्षेत्र के पेड़ों पर परिन्डे बांधते हुए व्यक्त किए।

अरविन्द पाण्डेय
प्रचार व कार्यालय मंत्री

चतुर्वेद शतक यज्ञ

दिनांक 20 से 23 मई 14 तक चतुवैद शतक यज्ञ आर्य उप प्रतिनिधि सभा आगरा के तत्वावधान में सम्पन्न हुआ। जिसमें नित्य प्रात: 7 से 9 बजे तक यज्ञ भजन प्रवचन दोपहर 11 से 4 बजे तक भजन प्रवचन एवं रात्रि 8 से 10 बजे तक हुये। जिसका स्थानीय जनता पर अत्यन्त प्रभाव पड़ा।

तम्बाकू निषेध दिवस पर विचार गोष्ठी

गंगोह (सहारनपुर) 31 मई 2014, उ.प्र. जनजागरण मंच की ओर से विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर विचार गोष्ठी आयोजित की गयी। खैनी हुक्का, तम्बाकू, गुटके, सुरती, बीड़ी-सिगरेट, भाँग चरस आदि से होने वाली बीमारियों और हानियों पर चर्चा की गयी और उनसे बचने के उपाय बताये गये।

कंकराली रोड़ स्थित बड़ा हनुमान मंदिर की प्रथम मंजिल पर संदीप तायल के कार्यालय में विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर आयोजित विचार गोष्ठी में कहा गया कि तम्बाकू और धूम्रपान के सेवन से अनेक प्रकार का कैंसर, दिल का दौरा, उच्च रक्त चाप, पक्षाघात, बांझपन, गर्भपात, असमय प्रसव, अविकसित भ्रूण, मृत बच्चों का जन्म एवं मानसिक बीमारियां हो रही है। तम्बाकू किसी भी रूप में मानव जीवन के लिए ठीक नहीं। बताया गया कि सार्वजनिक स्थलों पर इस एक्ट का उल्लंघन करने वाले व्यक्ति पर 200 रूपये के आर्थिक दण्ड के साथ दंडात्मक कार्यवाही करने का प्राविधान किया गया है। आज युवाओं को इसकी चपेट में आने से बचाने की बडी जरूरत है।

विचार गोष्ठी में संगठन के सदस्य डा. वीर सिंह भावुक, संदीप तायल, योगेन्द्र कश्यप व सतपाल त्यागी ने विचार व्यक्त किए।

इस मौके पर संगठन सदस्य संतकुमार वाल्मीकि उर्फ काका, मा. योगेश सैनी, ब्रजेश सैनी, मुनेश सैनी, सुभाष वाल्मीकी, सोमदत्त नामदेव, सुखपाल आदि रहे।

मोदी के प्रधानमंत्री पद की शपथ पर राष्ट्रीय प्रार्थना मंत्रों से यज्ञ-हवन

गंगोह (सहारनपुर) 26 मई 2014

डी.ए.वी. पब्लिक में आर्य वीर दल के चल रहे बालक प्रशिक्षण शिविर में चौथे दिन यज्ञ-हवन में राष्ट्रीय प्रार्थना के मंत्रों से विशेष आहुतियां डालकर नरेन्द्र मोदी को देश के प्रधानमंत्री पद की शपथ ग्रहण करने पर खुशी जताई गयी। डा. वीरसिंह भावुक व प्रियव्रत शास्त्री ने कहा कि क्रांतिकारी वीर शहीदों के खून पर तैरती राष्ट्रीय स्वतंत्रता की देवी आई है जिसके लिए देशवासियों को कृतज्ञ रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि मोदी संकीर्णवादी नेता नहीं बल्कि उनकी विचारधारा विस्तृत है और उन्होंने चुनौतियों से भरे ऐसे ही संकल्प को पूरा करने के लिए प्रधानमंत्री पद की शपथ लेकर जिम्मेदारी संभाली है। उनकी कार्यक्षमता का देशवासियों को पहले से ही भान है।

व्यायाम शिक्षक कृष्णपाल आर्य, महिपाल आर्य, राजेश आर्य, पंकज आर्य सहित शिविरार्थी बालक रहे।

गंगोह में आर्यवीर दल का बौद्धिक प्रशिक्षण शिविर

आर्य समाज गंगोह सहारनपुर के तत्वाधान में दिनांक 23 मई 14 से 30 मई 14 तक आर्य वीर दल का व्यायाम एवं बौद्धिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल गंगोह (निकट भारतीय जीवन बीमा निगम आफिस) तीतरों रोड पर किया गया है। जिसमें युवाओं को भारतीय संस्कृति, स्वस्थ जीवन सम्बन्धी योग आसन व्यायाम, शारीरिक एवं बौद्धिक ज्ञान वर्धन के लिए प्रशिक्षण दिया गया। शिविर का उद्घाटन 23 मई को श्री हरीसिंह आर्य उपमंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. ने किया तथा दिनांक 30 मई के समापन समारोह में मुख्य अतिथि आचार्य स्वदेश प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का उद्बोधन हुआ।

-देवेन्द्र कुमार आर्य, मंत्री

आर्य समाज बोझी बाजार मण्डी का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज बोझी बाजार मऊ का वार्षिकोत्सव दिनांक 12 से 14 जून तक प्रात: 6 बजे से 10 बजे तक तथा सायं 5 बजे से 9 बजे तक धूमधाम से मनाया जायेगा।

रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव
मंत्री

thearyasamaj.org

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०६४५६८११५१६, मंत्री-०६६१६२६७६६६, सम्पादक-६५३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com ९

सेवा में,

गुरूकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन (मथुरा) में प्रवेश प्रारम्भ

योगिराज भगवान श्री कृष्ण की जन्मस्थली एवं युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती की दीक्षास्थली पवित्र ब्रज भूमि मथुरा में प्रखर राष्ट्रभक्त महाराजा श्री महेन्द्र प्रताप द्वारा प्रदत्त सुविस्तृत भूखण्ड में स्थित श्रद्धेय नारायण स्वामी जी की तपस्थली गुरूकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं। प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण होने के उपरान्त ही विद्यार्थी को कक्षा 6 एवं 7 में योग्यता अनुसार प्रवेश दिया जा सकता है अथवा जिस विद्यार्थी को अन्य विषयों के साथ-साथ अष्टाध्यायी न्यूनतम 4 अध्याय कण्ठस्थ होगी, वह विद्यार्थी प्रवेश परीक्षा के उत्तीर्ण होने पर कक्षा 8 में भी प्रवेश पा सकता है।

गुरूकुल में प्राच्य व्याकरण के साथ साथ अन्य सभी विषयों का गहनता से अध्ययन कराया जाता है। अतः विद्यार्थी का मेधावी होना आवश्यक है, इसलिए अभिभावक मेधावी, सुशील विद्यार्थी को ही प्रवेशार्थ लायें।

गुरूकुलीय परिवेश पूर्णतः वैदिक संस्कारों से परिपूर्ण है, इसके साथ ही भोजन, आवास एवं अध्ययनादि की व्यवस्था भी अति उत्तम है, आर्यजन इसका लाभ उठाकर अपनी संतानों को शिक्षित, सक्षम, संस्कारवान एवं चरित्रवान, राष्ट्रभक्त बनाकर व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करें।

बालक ब्रह्मचर्य व्रत धारें, धर्म कर्म भरपूर करें।
ब्रह्म-विवेक-प्रकाश पसारें, मोह महातम दूर करें।
युक्ति प्रमाण तर्क पटुता से, भ्रम को चकनाचूर करें।
पन्थ न पकड़े मतवालों के, साधु स्वभाव न क्रूर करें।
सरल सुलक्षण संतानों को, संयमशील सुजान करो।
गुरूकुल पूजो वैदिक वीरों, विद्या बल धन दान करो।

आचार्य स्वदेश
कुलाधिपति
चलभाष-9456811519

आच[illegible]प्रकाश
प्राचार्य
945733[illegible] 837643458

गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

विद्यालय-विभाग (हरिद्वार) उत्तराखण्ड-249 404

प्रवेश सूचना

आर्य विद्या सभा गुरूकुल कांगड़ी, हरिद्वार द्वारा संचालित आधुनिक सुविधाओं सहित आवासीय विद्यालय गुरूकुल कांगड़ी विद्यालय-विभाग हरिद्वार (केवल छात्रों के लिए) एवं कन्या गुरूकुल 60, राजपुरा रोड, देहरादून (केवल कन्याओं के लिए) में सत्र 2014-15 हेतु कक्षा 01 से 9 तक एवं कक्षा 11 में प्रवेश प्रारम्भ है।

वैदिक संस्कारों पर आधारित दिनचर्या एन.सी.ई.आर.टी. पाठ्यक्रम, छात्र एवं छात्राओं का सर्वांगीण विकास करने वाली शिक्षण संस्था।

विज्ञान वर्ग में एवं एवं वाणिज्य वर्ग तथा कला वर्ग अध्ययन की सुविधा।

हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम

विशेष- हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत तीनों भाषाएं अनिवार्य हैं एवं उत्तर संस्कारों हेतु धर्मशिक्षा भी अनिवार्य है।

प्रवेश अवधि- 20 अप्रैल 2014 से 20 जुलाई 2014 तक प्रत्येक रविवार को प्रवेश परीक्षा प्रारम्भ है।

बालकों के प्रवेश हेतु
सम्पर्क सूत्र- 9927016872, 9412025930, 9690679382, 9927084378
वेबसाइट :

बालिकाओं के प्रवेश हेतु-
सम्पर्क सूत्र - 0135-2748334, 2748334, 9760183502, 9761219696, 9759348510

डा. सविता आनन्द
प्राचार्या
कन्या गुरूकुल, देहरादून

जयप्रकाश विद्यालंकार
सहायक मुख्याधिष्ठाता

स्वास्थ्य चर्चा-

गुणों की खान है गुड़

गुड़ के गुण से प्रभावित होकर पंडित श्रीभाव मिश्र जी कहते हैं-

दोषत्रय क्षयकराया नमो गुड़ाय

वात पित्त और कफ इन तीनों दोषों को नाश करने वाले गुड़ को सादर प्रणाम।

आयुर्वैदिक मत- गुड स्निग्ध-भारी, वीर्य वर्धक, वायुनाशक और मूत्र संशोधक है किंतु पित्त का अत्यन्त नाशक नहीं है।

नया गुड श्वांस, कफ खांसी, कृमि और अग्नि को बढ़ाता है। पुराना गुड हल्का पथ्य चिकनाहट से नाड़ियों का अवरोधक शरीर में गुस्सा न लाने वाला, मधुर पित्त नाशक, अग्निवर्धक, मैथुन शक्ति बढ़ाने वाला, वायुनाशक और रक्त को स्वच्छ करने वाला है। अधिक पुराना गुड उपयोग में नहीं लेना चाहिए यह मान्यता गलत है। गुड़ जितना पुराना होगा उतना ही गुणकारी होता है। एक वर्ष पुराना गुड़ पथ्य है तीन वर्ष का पुराना गुड़ सबसे अच्छा माना जाता है आहार और औषण में पुराने गुड़ का उपयोग हितावह हैं।

वैज्ञानिक मत- प्रति 100 ग्राम गुड़ में
ग्लूकोज 29 प्रतिशत खनिज द्रव 3.26 प्रतिशत जल 8 प्रतिशत
सुक्रोज 29.70 प्रतिशत

इसके अलावा लोहा, प्रोटीन, आयोडीन, विटामिन ए तथा बी भी भरपूर मात्रा में पाया जाता है 100 ग्राम गुड़ में 180 मिलीग्राम खनिज द्रव्य है। शक्कर में खनिज द्रव्यों और क्षारों का अभाव है।

इसके अलावा लोहा, प्रोटीन, आयोडीन, विटामिन ए तथा बी भी भरपूर मात्रा में पाया जाता है। 100 ग्राम गुड़ में 180 मिलीग्राम खनिज द्रव्य है। शक्कर में खनिज द्रव्यों और क्षारों का अभाव है।

बहुत समय से हमारे यहां गुड़ का प्रयोग पकवानों में होता रहा है। आज भी गुड का हलुआ, गुड़ की गज़क, गुड के गुलगुले, गुड के पुए, गुड के शक्कर पारे, गुड के लड्डू और तो और चाय भी गुड की बनती है। गुणों की खान गुड़ की पौष्टिकता से अपरिचित शहरी व्यक्ति चीनी का प्रयोग करते हैं। मानव शरीर के लिए गुड़ कर दृष्टि से लाभप्रद है।

चेतावनी

बसंत ऋतु में नहीं खाना चाहिए। पित्त प्रकृति वालों को भी नया गुड़ कभी नहीं खाना चाहिए, चर्मरोग कृमि दाँतों के रोग, आँखों के रोग, मन्द बुद्धि, ज्वर, मन्दाग्नि, जुकाम और मधुमेह में नया गुड़ नहीं खाना चाहिए। फल, उडद, दूध या तिल के साथ भी गुड़ नहीं खाना चाहिए।

हरिश्चन्द्र आर्य

आर्य उप प्रतिनिधि सभा आगरा द्वारा ग्रामीण अंचल में वेद प्रचार

श्री नरेश दत्त आर्य भजनोपदेशक अपने अनूठे वेद प्रचार रथ से जो ट्रैक्टर ट्राली पर निर्मित है- आगरा जनपद के विभिन्न ग्रामीण अंचलों में 12 मई से 24 मई तक वेद प्रचार बड़े ही प्रभावी ढंग से किया। जिसका स्थानीय जनता पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा।

रमाकान्त सारस्वत
संयोजक

निर्वाचन

आर्य समाज गान्धी नगर बस्ती
प्रधान - श्री उदयभान आर्य
मंत्री - श्री मुरलीधर भारती
कोषाध्यक्ष- श्री सन्त मिलन चौधरी

आर्य समाज चन्द्र नगर लखनऊ
प्रधान - श्री रण सिंह
मंत्री - श्रीमती अमिता वरमानी
कोषाध्यक्ष- श्री सुबोध कुमार सक्सेना

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक-आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक-श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफसेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है-सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।